International Journal for Multidisciplinary Research
Plagiarism & Intellectual Property Rights in Digital Age (PIPRDA-2023)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

ज्ञान के विस्तार में ओपन एक्सेस (खुली पहुँच) की उपयोगिता

[1]डॉ संतोष एस्के, [2]डॉ राकेश परमार

[1]सहायक प्राध्यापक, हिन्दी,
[2]सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय नेहरु स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आगर मालवा

''ज्ञान का प्रसार करने का हमारा मिशन केवल आधा पूरा हुआ है यदि जानकारी व्यापक रूप से और आसानी से समाज को उपलब्ध नहीं कराई जाती है'' – बर्लिन घोषणा, ओपन एक्सेस सप्ताह

सार संक्षेप

वर्तमान समय ज्ञान के विस्फोट का समय है. तकनीकी क्रांति के इस युग में हर पल एक नवीन तकनीकी का प्रादुर्भाव हो रहा है. तकनीकी के इन नवीन आविष्कारों में सूचना के विस्तारण के माध्यम से सम्बन्धित साफ्टवेयर और टूल्स के विकास में जो दिन दूनी-रात चौगुनी प्रगति हो रही है यह बहुत ही चमत्कारिक घटना के सामान है, वास्तव में जब इस सम्बन्ध में विचार करते है तब आश्चर्य होता है की फेसबुक, व्हाटसप, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, यू-ट्यूब, रील्स, आदि ये सूचना प्रसारण के ऐसे माध्यम बन गये हैं की इनमें क्या-कौन-कब-कैसे पलक झपकते ही वायरल हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता है. प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त से ही धार्मिक-आध्यात्मिक उपदेश, देश-दुनिया के ताजे समाचार, सूचनाएं आदि तमाम तरह के सन्देश हमें सैकड़ों – हजारों की संख्या में प्राप्त हो जाते हैं. इन संदेशों में कौन-सा सन्देश प्रसारित करने वाले का 'मौलिक' सन्देश है और कौन-सा सन्देश किसी दूसरे दे द्वारा रचित है. यह निर्णय कर पाना बहुत मुश्किल है. यदि इस तमाम संदेशों में से पाठक को इन्हें पढ़कर कोई प्रेरणा प्राप्त हो, कोई महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती हो और उसे ऐसा प्रतीत हो की इस सन्देश को अन्य तक भी प्रसारित करना चाहिए ताकि वे भी इसका लाभ ले सकें और यही विचार उस सन्देश को प्रसारित करने का कारण है. तो क्या यह 'साहित्यिक चोरी' का आरंभ माना जायेगा ?

विचार यह भी किया जा सकता है कि यदि समस्त मौलिक विचार, खोज, शोध, नवाचार, उत्पादन, सृजन आदि बौद्धिक संपदा किन्ही क़ानूनी नियमों में बंद हो तब उनका विस्तार, उपयोग और समाज को होने वाला लाभ किस मात्रा में और कैसे संभव होगा. चाहे प्रसार-प्रचार कितना ही विस्तृत क्यों न हो यदि वहां तक सुगम पहुँच न हो, लाभान्वित होने वाले समूह तक वह ज्ञान सुलभ न हो तो उस ज्ञान, खोज, नवाचार, उत्पादन, सृजन आदि का दूसरों को मिलने वाला लाभ बहुत विस्तृत न हो कर सिमित ही रह जायेगा.

यद्यपि इसका आशय यह कदापि नही है की किसी की मौलिक बौद्धिक सम्पदा का गलत उपयोग पाठकों, शोधको, उपभोक्ताओं को करने दिया जाये. यह तो उस व्यक्ति का नैतिक दायित्व है की किसी की बौद्धिक संपदा को चोरी करने, अपना कहने का अधिकार उसे बिलकुल नहीं है.

ज्ञान के विस्तार के लिए ओपन एक्सेस अथवा खुली पहुँच जिसे सुलभ व सुगम पहुँच भी कहा जा सकता है. इसलिए भी आवश्यक है कि जहाँ एक और समाज में ऐसे लोग भी हैं जिन्हें अपने रोजमर्रा की

वस्तुएं जुटाने में कठिन परिश्रम करना पड़ता है, उनके लिए ग्रंथालय जाना, पुस्तक खरीदना, देशाटन करना, ज्ञान प्राप्ति के लिए जीवन यापन के कार्य के अतिरिक्त कोई और कार्य करना आदि बहुत कठिन हो जाता है. ऐसे में यदि उपलब्ध ज्ञान को भी खुली पहुँच में न रखकर उसे खरीदने बेचने के लिए धन लिया जाने लगता है तब यह केवल धनवानों के लिए ही उपयोगी हो सकेगा. आम जन जो ज्ञान पिपासु है लेकिन धनाभाव के कारण उपलब्ध ज्ञान तक नहीं पहुँच सकते हैं उनके लिए ओपन एक्सेस बहुत उपयोगी है.

ओपन एक्सेस का अभिप्राय -

ओपन एक्सेस का अर्थ है सभी के लिए सूचना, सूचना तक सभी की मुफ्त पहुंच और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का अप्रतिबंधित उपयोग करना है. यह टेक्स्ट और डेटा से लेकर सॉफ़्टवेयर, ऑडियो, वीडियो और मल्टी.मीडिया तक किसी भी प्रकार की डिजिटल सामग्री हो सकती है। ओपन एक्सेस अर्थात खुली पहुंच वह नीति है, जिसके द्वारा अकादमिक जानकारी जैसे - प्रकाशन और डेटा तक मुक्त और खुली ऑनलाइन पहुंच प्रदान करता है. हम अक्सर इंटरनेट पर जाकर google या अन्य सर्च इंजिन से हमारे अपने लिए जो कुछ भी जानकारी, सूचना, डेटा आदि सर्च करते हैं, यदि वह जानकारी सुगमता से हमें प्राप्त हो जाए उस जानकारी को अपने उपयोग के लिए कॉपी-पेस्ट कर सकते हैं, प्रिंटआउट ले सकते हैं और किसी शुल्क के बिना या किसी बाधा के बिना यह स्त्रोत जहां से हमने जानकारी का अपने हिसाब से उपयोग किया वह ओपन एक्सेस या खुली पहुंच वाली जानकारी कही जाएगी.

ओपन एक्सेस एक अंतरराष्ट्रीय आंदोलन है. शोध अनुसंधान के क्षेत्र में शोधकर्ताओं द्वारा पूर्व में किए गए शोध कार्यो की रिपोर्ट, शोधपत्र आदि को विभिन्न ऑनलाइन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता है, साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले शोध कार्यों को भी ऑनलाइन उपलब्ध कराया जाता है. ओपन एक्सेस नीति द्वारा शोधार्थियों को व अन्य समस्त उन लोगों तक सुगमता पूर्वक संबंधित साहित्य, शोध पत्र, शोध रिपोर्ट, आलेख आदि तक पहुंच बनाने के लिए यह कार्य, यह नीति बनाई गई.

ओपन एक्सेस के लाभ एवं महत्त्व -

ज्ञान के विकास को आगे बढ़ाने के लिए लोगों की प्रासंगिक साहित्य तक पहुँच होनी चाहिए. लेकिन पसर के बिना ज्ञान अदृश्य रहता है. वैज्ञानिक अनुसन्धान में सुधर करने में योगदान देने के अलावा लोगों की जानकारी को मजबूत करने और उनकी रचनात्मकता में मदद करने के लिए ओपन एक्सेस शिक्षा का एक शक्तिशाली उपकरण हैं. वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार और उनके व्यापक प्रसार से न केवल शोधकर्ताओं बल्कि पुरे समाज को स्पष्ट लाभ होता है. ओपन एक्सेस क्यों आवश्यक है? इस प्रश्न का उत्तर यह हो सकता है कि 'विद्वानों के अनुसंधान के लिए सुगम पहुंच को कई कारणों से जनता के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है.

ओपन एक्सेस का महत्वपूर्ण लाभ यह है कि जब कभी हमें किसी अकादमिक शोध परिणामों को देखने, पुनर्मूल्यांकन करने, डेटा का उपयोग करने की आवश्यकता हो और उस पेज पर हमें यह करने की अनुमति नहीं मिलती है उस स्थिति में हम समझ जाते हैं कि हम जो दस्तावेज प्राप्त करना चाहते हैं वह ओपन एक्सेस की सुविधा से रहित है. इस प्रकार ओपन एक्सेस या खुली पहुंच सुगम व सुनहरा मार्ग है. यह एक डायमंड रूप है. जिसमें हमें जो दस्तावेज लेना है या प्रकाशित करवाना है उसका कोई चार्ज नहीं लगता. कुछ ऑनलाइन जर्नल शुल्क भी लेते हैं. ओपन एक्सेस साहित्य डिजिटल, ऑनलाइन, निशुल्क और अधिकांश

कॉपीराइट और लाइसेंस आदि प्रतिबंधों से मुक्त है. जो चीज इसे संभव बनाते हैं वह इंटरनेट और लेखक या कॉपीराइट धारक की सहमति देना है.

ओपन एक्सेस वाली पत्रिकाओं व वेबसाइटों का एक स्पष्ट लाभ यह है इसकी सदस्यता लेने वाले पुस्तकालय के साथ ही उससे संबंधित उपयोग करने वाले आमजन के लिए बेहतर तरीके से वहां तक पहुंच, उसके उपयोग की दृष्टि से लाभकारी और इस चिंता के बिना की उसका कोई तकनीकी या किसी प्रकार का दुरुपयोग होगा. ओपन एक्सेस आंदोलन अकादमिक शोध तक सुलभ पहुंच को प्रतिबंधित करने के कारण उत्पन्न सामाजिक असमानता और समस्याओं से प्रेरित आंदोलन है.

ओपन एक्सेस आन्दोलन एवं भारत में ओपन एक्सेस जागरूकता

विद्वता पूर्ण प्रकाशनों के क्षेत्र में शोधकर्ताओं और प्रकाशक के बीच निर्बाध पहुंच हेतु ओपन एक्सेस के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए दुनिया भर में इंटरनेशनल ओपन एक्सेस वीक मनाया जाता है. यह अक्टूबर के अंतिम सप्ताह के दौरान विश्व स्तर पर मनाया जाता है ओपन एक्सेस प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं और अवसरों को उजागर करने के लिए ऐसी विभिन्न आउटरीच गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जिसमें वार्ता, सेमिनार, संगोष्ठी या ओपन एक्सेस अधिवेशन या ओपन एक्सेस में अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियों की घोषणा शामिल होती है.

बर्लिन में ओपन एक्सेस जागरूकता को लेकर हुए सम्मेलन में कहा गया कि - *''ज्ञान का प्रसार करने का हमारा मिशन केवल आधा पूरा हुआ है यदि जानकारी व्यापक रूप से और आसानी से समाज को उपलब्ध नहीं कराई जाती है''*

उक्त कथन से स्पष्ट होता है की ज्ञान का प्रचार करना, उसे व्यापक रूप में प्रसारित करना जिससे विश्व समुदाय का प्रत्येक सदस्य लाभान्वित हो सके. इस प्रकार ज्ञान के विश्व्यापी प्रसार के लिए ही ओपन एक्सेस आन्दोलन का उद्भव हुआ है अतः इस आन्दोलन की सफलता भी ज्ञान के विस्तार में ही है.

भारत में भी ओपन एक्सेस आन्दोलन के प्रति जागरूकता हेतु सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर द्वारा "अंतर्राष्ट्रीय ओपन एक्सेस वीक-2022" मनाया गया. विद्वतापूर्ण प्रकाशनों के क्षेत्र में शोधकर्ताओं और प्रकाशकों के बीच निर्बाध पहुँच (ओपन एक्सेस) जागरूकता पैदा करने के लिए दुनिया भर में इंटरनेशनल ओपन एक्सेस वीक मनाया जाता है। इसे अक्टूबर के अंतिम पूर्ण सप्ताह के दौरान विश्व स्तर पर मनाया जाता है। ओपन एक्सेस पब्लिशिंग के विभिन्न पहलुओं एवं अवसरों को उजागर करने के लिए ऐसी विभिन्न आउटरीच गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जिसमें वार्ता, सेमिनार, संगोष्ठी, या ओपन एक्सेस अधिदेश (मैंडेट) या ओपन एक्सेस में अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियों की घोषणा शामिल है। वर्ष 2022 में द इंटरनेशनल ओपन एक्सेस वीक का आयोजन उत्सव अपने अपने पंद्रहवें वर्ष में प्रवेश कर गया है । "निर्बाध पहुँच विद्वतापूर्ण प्रकाशनों की आवश्यकता (नीड फॉर ओपन एक्सेस स्कॉलरली)" पर ओपन एक्सेस के अधिवक्ता श्री एम. मधान ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया.

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद–राष्ट्रीय परियोजना विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–एनआईएससीपीआर) भारत के सबसे बड़े ओपन एक्सेस प्रकाशकों में से एक है जो 15 डायमंड ओपन एक्सेस विद्वानों की पत्रिकाओं को प्रकाशित करता है। इसके लिए सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर न तो लेखकों से कोई प्रकाशन शुल्क लेता है और न ही पाठकों से कोई सदस्यता शुल्क।

"इंटरनेशनल ओपन एक्सेस वीक" मनाने के लिए "नॉन-कमर्शियल ओपन एक्सेस जर्नल्स : हाउ टू सेल डायमंड्स इन द रश फॉर (फूल्स) गोल्ड" शीर्षक से एक व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसे ओपन एक्सेस के अधिवक्ता और सूचना विज्ञान विशेषज्ञ श्री एम मधान द्वारा 31 अक्टूबर, 2022 को सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर, पूसा परिसर में सम्बोधित किया गया था। उन्होंने ओपन एक्सेस विद्वतापूर्ण प्रकाशन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और ऐसे प्रकाशन मॉडल की चुनौतियों पर चर्चा की। डायमंड ओपन एक्सेस पब्लिशिंग पर अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर भी विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि न केवल एक देश बल्कि पूरे विश्व के सतत विकास के लिए विद्वतापूर्ण डेटा तक बिना किसी राजनीतिक और आर्थिक सीमाओं के सभी के लिए निर्बाध पहुँच होनी चाहिए। व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ। सत्र की अध्यक्षता वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद–राष्ट्रीय परियोजना विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–एनआईएससीपीआर) की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने की। प्रो. रंजना अग्रवाल ने डायमंड ओपन एक्सेस स्कॉलरशिप जर्नल के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता को विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर अपनी ओपन एक्सेस स्कॉलरशिप पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्र के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर के वैज्ञानिक डॉ. मेहर वान ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और मुख्य वैज्ञानिक एवं शोध पत्रिका प्रभाग के प्रमुख डॉ. जी महेश ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

संदर्भ -

1. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1872523 . (Posted On: 31 OCT 2022 6:05PM by PIB Delhi)
2. https://en-unesco-org.translate.goog/open-access/what-open-access?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc#:~:text=Open%20access%20(OA)%20means%20free,video%2C%20and%20multi%2Dmedia.
3. https://en.unesco.org/open-access/sites/open-access/files/215863e.pdf
4. https://en.unesco.org/open-access/sites/open-access/files/oa_policy_rev2_7.pdf
5. https://en.unesco.org/open-access/sites/open-access/files/berlin_declaration.pdf
6. https://openaccess.mpg.de/
7. https://www-unesco-org.translate.goog/new/en/communication-and-information/portals-and-platforms/goap/?_x_tr_sch=http&_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc